टिप्पणियाँ

11

भारत के सांस्कृतिक आकर्षण

भारतीय संस्कृति के आकर्षण लोगों की जीवन शैली के बारे में बताते हैं। ये उनकी भाषा, धर्म, नृत्य, संगीत, वास्तु, भोजन और रीति रिवाज हो सकते हैं। चूँकि भारत बहुत अधिक जनसंख्या वाला एक विशाल देश है इसलिए एक स्थान की संस्कृति दूसरे स्थान से भिन्न है। भारत बहुत से धर्मों का घर माना जाता है और यहाँ बहुत से उत्सव मनाए जाते हैं। वर्ष के किसी भी महीने में धार्मिक उत्सव होना निश्चित है। फिर चाहे, वह बैसाखी, होली, ईद, महावीर जयंती, बुद्ध पूर्णिमा, गुरु पर्व, दशहरा, दीपावली या क्रिसमस हो। उत्सव हमारे देश की संस्कृति का मुख्य हिस्सा हैं। इन उत्सवों को रंग, उत्साह, उमंग, प्रार्थनाओं और संस्कारों द्वारा वर्गीकृत किया जाता है। विदेशी पर्यटक अक्सर भारत में आयोजित होने वाले मेलों और त्योहारों की विविधता को देखकर प्रभावित होते हैं। इसलिए हमारे देश में सांस्कृतिक घटक पर्यटकों को आकर्षित करने में मुख्य भूमिका निभाते हैं।

जब विदेशी पर्यटक भारत की यात्रा करते हैं अथवा घरेलू पर्यटक अपने शहर से दूसरे स्थान पर जाते हैं तो उन्हें उन विशेष शहरों और स्थानों पर आयोजित होने वाले मेलों और त्योहारों में अवश्य भाग लेना चाहिए। इस संदर्भ में एक रुचिकर उदाहरण दशहरे का त्योहार है जो कि मैसूर या हिमाचल प्रदेश के कुल्लू में मनाया जाता है। यदि वे दिल्ली में होते हैं तो भ्रमण करने के लिए 14 नवंबर से 27 नवंबर तक प्रगति मैदान में आयोजित होने वाला लोकप्रिय अंतर्राष्ट्रीय व्यापार मेला एक बहुत ही विशिष्ट स्थान है। यहाँ आप सभी राज्यों द्वारा प्रदर्शित संपूर्ण देश की विभिन्न पैदावारों, धरोहरों और उत्पादों के प्रत्यक्षदर्शी हो सकते हैं। उनके लिए एक अन्य देखने योग्य महत्वपूर्ण मेला प्रतिवर्ष 1 फरवरी से 15 फरवरी तक फरीदाबाद में सूरजकुंड में आयोजित 'सूरजकुंड शिल्प मेला' हो सकता है। इस प्रकार, इस अध्याय में हम भारत के कुछ मेलों और त्योहारों के विषय में अध्ययन करेंगे जिनका भ्रमण पर्यटकों द्वारा किया जाना चाहिए।

उद्देश्य

इस पाठ के अध्ययन के पश्चात आप:

- भारत के विविध सांस्कृतिक पक्षों का वर्णन कर पाएँगे;

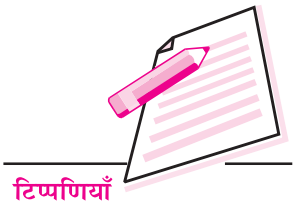

- भारत के प्रसिद्ध मेलों और उत्सवों को उनके प्रांत और महीने जिनमें ये आयोजित होते हैं, उनके सहित सूचीबद्ध कर पाएँगे;
- भारत के महत्वपूर्ण उत्सवों का वर्णन कर पाएँगे;
- पर्यटकों के आकर्षण केंद्र के रुप में मेलों और उत्सवों के महत्व का वर्णन कर पाएँगे;
- ऐसी घटनाओं का वर्णन कर पाएँगे जो हमारी संस्कृति का एक अभिन्न हिस्सा हैं और
- पर्यटकों में लोकप्रिय कुछ व्यंजनों की सूची बना पाएँगे।

11.1 संस्कृति के विभिन्न पक्ष

भारत देश के भीतर एक जगह से दूसरी जगह की भाषा, धर्म, नृत्य, संगीत, वास्तुकला, भोजन और रीति-रिवाज भिन्न हैं। पर्यटक 'गंतव्य स्थलों' की सांस्कृतिक विशेषताओं को जानना एवं उनकी एक झलक पाना चाहते हैं। मेलों और उत्सवों द्वारा हम अपनी संस्कृति का विस्तृत रूप देख सकते हैं। हमारे देश में दो मुख्य प्रकार के उत्सव होते हैं। एक वे जो हमारे देश की प्रमुख घटनाओं से सम्बंधित होते हैं और राष्ट्रीय त्योहार कहलाते हैं और दूसरे वे जो अन्य धर्म और प्रांतों से संबंधित होते हैं। इन दोनों ही कार्यक्रमों में हम अन्य सांस्कृतिक घटकों को जोड़कर इन कार्यक्रमों को जीवंतता और उत्साह प्रदान करते हैं। ये भोजन, खेल, नृत्य और संगीत हो सकते हैं। भारतीय नाचने- गाने या संगीत सुनने और नृत्य की घटनाओं का आनंद लेने का अवसर नही छोड़ते वहीं पर भोजन इन कार्यक्रमों का अत्यधिक महत्वपूर्ण घटक है।

भारत में समय-समय पर आयोजित होने वाले मेले पर्यटकों में उमंग और उत्साह का संचार करते हैं, जिनके कारण वे भारत -भ्रमण करना पसंद करते हैं।

मेले, जहाँ लोगों को एकत्रित कर व्यापार की वस्तुएँ या अन्य समान, जिसमें पशुओं की खरीद-बेच भी शामिल है, दिखाया जाता है। ये मेले अक्सर अस्थायी प्रकृति के होते हैं, जो केवल दोपहर तक या एक पखवाड़े तक समाप्त हो जाते हैं।

त्योहार धार्मिक घटनाओं से जुड़े होते हैं जो कि किसी सम्प्रदाय विशेष की धार्मिक घटनाओं पर केंद्रित होकर मनाये जाते हैं। इन उत्सवों से बहुत सी दिलचस्प कहानियाँ जुड़ी हो सकती हैं। आप कई कहानियों से परिचित होंगे, ऐसी ही एक दिलचस्प कहानी 'ईदगाह' है जो हमारे हिंदी के सुप्रसिद्ध लेखक मुंशी प्रेमचंद द्वारा लिखी गई थी। लेखक एक युवा बच्चे की कहानी का वर्णन करता है जिसे ईद के अवसर पर ईदगाह पर खर्च करने के लिए कुछ पैसे मिलते है, जिनसे वह अपनी दादी के लिए एक चिमटा लाता है। जो यह दर्शाता है कि ईदगाह का बच्चे के जीवन में महत्वपूर्ण स्थान है। इसी प्रकार यहाँ ऐसे स्थान है जहाँ लोग उत्सवों को मनाने के लिए एकत्रित होते हैं। उदाहरण के लिए इलाहाबाद में लगने वाला कुंभ मेला जहाँ भारी भीड़ के कारण बच्चे अपने माता-पिता से बिछुड़ जाते है। ये खोया-पाया की कहानियाँ हमारे भारतीय सिनेमा में भी लोकप्रिय विषय बन जाती हैं।

चूँकि भारत कई धर्मों का घर माना जाता है इसलिए यह आश्चर्यजनक नहीं है कि वर्ष का कोई भी महीना शायद ही ऐसा हो, जिसमें त्योहार न मनाया जाता हो। यदि त्योहारों को मनाया जाता

है तो क्या खुशियाँ और मनोरंजन से वंचित रहा जा सकता है! कुछ उत्सव नृत्य और संगीत के साथ मनाए जाते हैं। उदाहरणत: हमारे देश का लोकप्रिय उत्सव दशहरे पर हर वर्ष मंच पर सुप्रसिद्ध 'राम लीला' का आयोजन किया जाता है। दिल्ली में लाखों लोग इसे देखते हैं। हर वर्ष बड़े औद्योगिक घरानों द्वारा प्रायोजित कई प्रदर्शन होते हैं। रामलीला का मंचन प्रसिद्ध महाकाव्य 'रामायण' को उन भारतीयों में लोकप्रिय बनाने में सहायता करता है, जो इसके बारे में जानना चाहते हैं। इस पाठ में आप पर्यटकों के भ्रमण-योग्य स्थानों एवं उत्सवों के बारे में पढ़ेंगे। यह भी जानना दिलचस्प होगा कि ये उत्सव कब, कहाँ, कैसे और क्यों मनाए जाते हैं, जोकि पर्यटकों को उस स्थान के बारे में जानने एवं उससे जुड़ी घटनाओं को समझने में सहायक होगा।

? क्या आप जानते हैं?

- धर्म आस्था, संस्कृति और विश्व के विचारों का एक संगठित संग्रह है जो मानवता को आध्यात्मिकता से और कभी- कभी नैतिक मूल्यों से जोड़ता है।
- परम्परा एक आस्था या व्यवहार है जो समाज में अतीत में उत्पन्न हुए सांकेतिक अर्थों या विशेष बातों को समाज या समुदायों द्वारा भावी पीढ़ियों में प्रसारित किया जाता है।

आपको यह जानकर आश्चर्य होगा कि हमारे बहुत से त्योहार चंद्र कैलेंडर पर आधारित है। अधिकतर उत्सवों के दिन चंद्र कैलेंडर द्वारा पूर्व निर्धारित तिथियों से निश्चित नहीं किए जाते बल्कि चंद्रमा के घटने -बढ़ने पर आधारित होते हैं। इस्लामिक त्योहार मुस्लिम या हिजरी कैलेंडर के अनुसार मनाए जाते हैं।

मकर संक्राति एकमात्र उत्सव है जो सूर्य पर आधारित है, उत्सव सदा किसी धार्मिक घटना से जुड़े होते हैं जैसे दीपावली को राजा राम के अयोध्या लौटने से जोड़ा जाता है और इसके साथ-साथ अन्य कई घटनाओं के बारे में आप दीपावली के खंड में पढ़ेंगे।

गुरुपर्व, गुरु नानक जी के जन्म आदि एवं अन्य सिख गुरुओं से सम्बंधित है, ये उत्सव धार्मिक उत्साह, आस्था से भरपूर होते हैं, यह समय न केवल अपने ईष्ट की पूजा करने का होता है बल्कि खुशियाँ, आनन्द और उमंग का भी होता है। परिवार और मित्रगण मिलकर नए वस्त्रों, स्वादिष्ट भोजन के साथ एक दूसरे के घर जाकर शुभकामनाएँ देते हुए इन त्योहारों को मनाते हैं। यह भाग हमारे देश के कई उत्सवों व उनके समय, जिन महीनों में ये मनाये जाते है, के बारे में बताता है।

11.2 विभिन्न महीनों में आयोजित होने वाले मेलों और उत्सवों की सूची

जनवरी

- राजस्थान में बीकानेर उत्सव, गुरु गोविंद सिंह जी का जन्मदिवस।
- मदुरई तमिलनाडु में नौका उत्सव, कोवलम केरल का केरल ग्राम उत्सव, पंजाब में एवं उन स्थानों पर, जहाँ पंजाब से आए लोग रहते हैं, लोहड़ी।

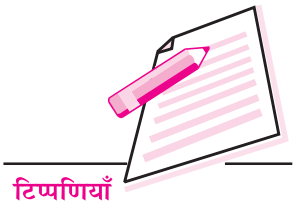

- महाराष्ट्र, कर्नाटक, बिहार, पश्चिम बंगाल, आंध्र प्रदेश और भारत के उत्तरीय प्रांतो में मकर संक्रांति।
- मामलापुरम, तमिलनाडु का मामलापुरम नृत्य उत्सव, मोढेरा, गुजरात के सूर्य मंदिर का मोढेरा नृत्य उत्सव, राजस्थान का नागोर पशु उत्सव।
- अहमदाबाद, गुजरात का राष्ट्रीय पतंग उत्सव, कर्नाटक का पत्तदक्कल नृत्य उत्सव, तमिलनाडु और आंध्र प्रदेश में पोंगल, पूरे देश मे मनाया जाने वाला गणतंत्र दिवस।
- उत्तर भारत में सरस्वती पूजा/वसंत पंचमी और पश्चिम बंगाल का जायॅदेव कंदुली मेला।

फरवरी

- बुंदेलखंड, मध्यप्रदेश का खजुराहो नृत्य उत्सव, हैदराबाद, आंध्र प्रदेश का दक्कन उत्सव।
- जैसलमेर, राजस्थान का मरु उत्सव, ईद-मिलाद-उल-नबी।
- मुम्बई का हाथी उत्सव, गोवा का गोवा कार्निवल, महा शिवरात्रि।
- तिरुवंतपुरम, केरल का निशा गांधी नृत्य उत्सव, चंडीगढ़ में गुलाब उत्सव।
- हरियाणा में सूरज कुंड शिल्प मेला, आगरा, उत्तर प्रदेश का ताज महोत्सव, तमिलनाडु का थाई पूसम।
- उद्यान उत्सव, दिल्ली।
- अंतर्राष्ट्रीय योग सप्ताह, ऋषिकेश, उत्तराखंड।

मार्च

- चापचर कुट, मिजोरम।
- हाथी उत्सव, जयपुर, राजस्थान।
- गुडी पड़वा या उद्गी, महाराष्ट्र, आंध्रप्रदेश और कर्नाटक, होली।
- होयसाल महोत्सव, बेलूर-हेलबिद, कर्नाटक, अंतर्राष्ट्रीय फूल महोत्सव, सिक्किम।
- मेवाड़ उत्सव, उदयपुर, राजस्थान, नाट्यांजलि उत्सव, चिदम्बरम, तमिलनाडु, ऐलोरा उत्सव महाराष्ट्र।

अप्रैल

- बैसाखी पंजाब में, असम में बीहू।
- गुड फाईडे, ईस्टर, महावीर जयंती, राम नवमी।
- केरल में विशु, बुद्ध पूर्णिमा।

टिप्पणियाँ

मई

- गंगा दशहरा, उत्तर भारत।

जून

- हेमिस महोत्सव लद्दाख और जम्मू कश्मीर में, उड़ीसा में रथ यात्रा।
- लेह, लद्दाख और जम्मू कश्मीर में सिंधु दर्शन महोत्सव, अजमेर, राजस्थान में उर्स।

जुलाई

- आषाढ़ी एकादशी, पंधारपुर, अंतर्राष्ट्रीय आम उत्सव, दिल्ली, चम्पकफम नाव रेस, केरल, गुरु पूर्णिमा।
- नाग पंचमी, महाराष्ट्र, पश्चिम बंगाल और दक्षिण भारत।

अगस्त

- ईद-उल-फितर, स्वतंत्रता दिवस, जन्माष्टमी।
- नेहरु ट्राफी बोट रेस, केरल, ओनम, केरल।
- रक्षा बंधन, उत्तरी भारत, तीज, राजस्थान और उत्तर प्रदेश।

सितम्बर

- गणेश चतुर्थी, महाराष्ट्र, तमिलनाडु, आंध्र प्रदेश और केरल में, तारनेतर मेला, सौराष्ट्र, गुजरात।
- पुणे उत्सव, महाराष्ट्र।

अक्टूबर

- दुर्गा पूजा पश्चिम बंगाल में, दशहरा, दीपावली।
- ईद-उल-जुहा (बकरा ईद)।
- जोधपुर, राजस्थान मे मारवाड़ उत्सव, महात्मा गांधी का जन्मदिवस।
- नवरात्रि पर्व।
- राजगीर नृत्य उत्सव, बिहार।

नवम्बर

- हंपी उत्सव कर्नाटक।

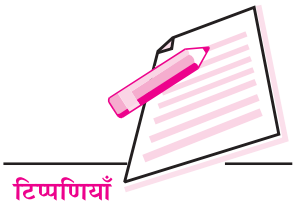

- का पॉमबलैंग नॉगक्रेम, शिलांग, मेघालय।
- लखनऊ उत्सव, उत्तर प्रदेश, मुहर्रम, पुष्कर मेला, राजस्थान।
- सोनपुर मेला, बिहार, गुरुपर्व, पंजाब।

दिसम्बर

- कार्तिक एकादशी।
- कोणार्क नृत्य उत्सव, उड़ीसा।
- चेन्नई नृत्य और संगीत मेला, तमिलनाडु।
- कुरुक्षेत्र मेला, हरियाणा।
- द्वीप पर्यटन महोत्सव, पोर्ट ब्लेयर, अंडमान और निकोबार द्वीप समूह, शांति निकेतन, बंगाल मे पोश मेला।
- गंगा सागर मेला, बंगाल सागर मेला, बंगाल विष्णु पुर मेला।

11.3 भारत में त्योहार

भारत में त्योहारों और मेलों का मनाया जाना उत्सवों को अद्भुत एवं आनंदमयी शृंखला बनाता है। यह जन्म और मृत्यु के बीच संस्कारों के मार्ग को चिन्हित करता है। ऐसा कहा जाता है कि भारत में वर्ष के दिनों से भी ज्यादा यहाँ के उत्सवों की संख्या है। छोटे स्थानीय गाँव में प्रार्थना और आराधना की रीतियों को उतने ही उत्साह के किया जाता है, जैसे कोई बड़ा उत्सव हो। इन अवसरों पर किसी भी कार्यक्रम में लाखों या उससे भी अधिक लोगों की भीड़ भी आ सकती है। कभी-कभी मेले और त्योहार देवियों, देवताओं, गुरुओं, वीरों, विरांगनाओं, मोहम्मदों और संतों के जन्मदिवसों के स्मरणोत्सव और महान कर्मों के यादगार क्षण हो सकते हैं। इन अवसरों को लोग एक साथ मनाते हैं। भारत के प्रत्येक धार्मिक समुदायों-हिंदू, मुस्लिम, ईसाई, सिख, बौद्ध, जैन और अन्य में प्रायः ऐसे दिवस मनाए जाते हैं।

भारत के मुख्य धार्मिक-सांस्कृतिक और राष्ट्रीय त्योहार हैं - मकर संक्रांति, बैसाखी, दीपावली, दुर्गा पूजा, दशहरा, ओणम, होली, जन्माष्टमी, करवा चौथ, महा शिवरात्रि, नाग पंचमी, गणेश चतुर्थी, नवरात्रि, पोंगल, रक्षा बंधन, गुरु नानक जयंती, लोहड़ी, ईद-उल-फितर, मोहर्रम, राम नवमी, क्रिसमस, गुड फ्राईडे, महावीर जयंती, कुंभ मेला, बाल दिवस, जमशीद नवरोज़, बुध पूर्णिमा, हेमिस गोमपा आदि। और कई उत्सव हैं, जिनके बारे में आप पहले ही पढ़ चुके हैं।

राष्ट्रीय उत्सवों में गांधी जयंती, स्वतंत्रता दिवस, गणतंत्र दिवस शामिल हैं। अब हम भारत के इनमें से कुछ उत्सवों के बारे में थोड़ा और विस्तार से पढ़ेंगे।

चित्र 11.1: पर्यटक आकर्षक भारतीय त्योहार

दशहरा

दशहरा सबसे लोकप्रिय भारतीय त्योहारों में से एक है जो हिंदू मास अश्विन (सितम्बर या अक्टूबर) में मनाया जाता है। इस दिन महान हिंदू ग्रंथ 'रामायण' के नायक, भगवान राम ने लंका के दस सिर वाले दुष्ट राक्षस- लंका नरेश रावण, जिसने भगवान राम की पत्नी सीता जी का अपहरण किया था, को परास्त किया था। यह उत्सव कम से कम दस दिनों तक चलता है। लोग बड़े उत्साह के साथ जगह-जगह पर आयोजित रामलीलाओं को देखने जाते हैं। दसवें दिन अर्थात दशहरे पर रावण और उसके भाई कुम्भकरण और पुत्र मेघनाथ के पुतले जलाए जाते हैं। लोग भगवान राम द्वारा बुराई पर विजय प्राप्त करने पर खुशियाँ मनाते हैं। हिमाचल में कुल्लू और मैसूर में दशहरा पर्यटकों में लोकप्रिय एवं प्रसिद्ध आकर्षण स्थल हैं। ऐसे अवसरों पर कठपुतली का कार्यक्रम, नृत्य, संगीत, झूले, खेल, भोजन की दुकानों पर खरीद-बेच करते लोग, गुब्बारे वाला, चाट वाला ये सब देखे जा सकते हैं।

दुर्गा पूजा

नीले आकाश में सफेद बादलों और शीतल हवा में चुभन, हेमंत ऋतु का आगमन दर्शा रही हो तो समझो कि बंगाल की प्रसिद्ध दुर्गा पूजा का समय आ गया है। भूमण्डलीकरण और व्यावसायीकरण के कारण कई बंगाली लोग देश के विभिन्न भागों में स्थानांतरित हो चुके हैं इसलिए आप प्रमुख केंद्रों पर देवी दुर्गा की पूजा के कई पंडाल देख सकते हैं। वास्तव में यह उत्सव वर्ष में दो बार मनाया जाता है-एक बार मार्च या अप्रैल (वसंत) के महीने में और दोबारा सितम्बर या अक्टूबर मास (अश्विन), चाँदनी पखवाड़े में। दोनों ही अवसरों पर नौ दिनों की पूजा होती है, जिसका संयोगवश अंतिम दिन क्रमशः राम नवमी और दशहरा होता है। प्रथम आयोजन भगवान राम के जन्म से संबंधित होता है और दूसरा रावण, कुम्भकरण और मेघनाथ के भगवान राम द्वारा मारे

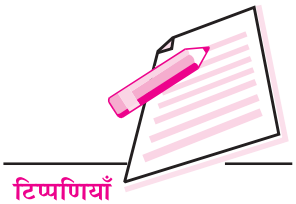

जाने से संबंध रखता है। पूरे भारत में देवी माँ कई रुपों में पूजनीय है यद्यपि बंगालियों में सबसे अधिक लोकप्रिय हैं।

दीपावली

दीपावली या रोशनी का उत्सव भारत के सभी हिंदू उत्सवों में से संभवत: सर्वाधिक लोकप्रिय त्योहार है। यह दशहरा के बीस दिन बाद आता है। यह एक आनंदमय उत्सव है, जो भगवान राम द्वारा रावण को मारने के बाद वनवास से वापस लौटने पर मनाया जाता है। लोग अपने घरों को सजाते हैं। भारत का यह उत्सव धार्मिक उत्साह, उमंग और आनंद का प्रदर्शन करता है। दीपावली का यह पर्व देश के कई भागों में समान उत्साह और जोश के साथ मनाया जाता है। ज्यादातर त्योहारों की तरह, यह त्योहार भी भारत में आने वाले पर्यटकों को बहुत आकर्षित करता है।

होली

होली जो सभी हिन्दू त्योहारों में से सबसे अधिक उत्साहपूर्ण उत्सव है, पूरे उत्तर भारत में मनाया जाता है। यह शीत ऋतु के समाप्त होने एवं वसंत ऋतु के आरम्भ होने की जैसे घोषणा करता है और जीवन की जीवंतता को पुनर्जीवित करने का संकेत देता है। यह एक आनंदमय उत्सव है, जब लोग सारे बैर-भाव मिटा कर एक दूसरे को क्षमा कर देते हैं। लोग एक दूसरे पर गुलाल और पानी डाल कर खुशियाँ मनाते हैं। नृत्य और गान इस अवसर के उत्साह में चार-चाँद लगा देता है। मथुरा और ब्रज भूमि के छोटे- छोटे नगरों में जहाँ श्री कृष्ण का स्थान है, वहाँ होली उत्सव का भव्य प्रदर्शन होता है। वर्ष के इस समय पर बहुत से पर्यटक होली उत्सव का आनंद लेने के लिए यहाँ आते हैं।

ईद-उल-फितर

ईद-उल-फितर भारत का सबसे बड़ा मुस्लिम उत्सव है। यह उत्सव जितना अपने समय के लिए महत्वपूर्ण है, उतना ही अपने धार्मिक आशयों के लिए भी है।यह त्योहार शव्वल (हिजरी वर्ष (मुस्लिम वर्ष) का एक मास) के पहले दिन पर, रमजान (उपवास माह और मुस्लिम वर्ष का नवाँ मास) के महीने के बाद मनाया जाता है। ऐसा माना जाता है कि रमजान माह में कुरान पैगम्बर मोहम्मद के समक्ष प्रकट हुई थी। रमजान के पूरे मास में उपवास रखा जाता है जोकि हर दिन सूर्यास्त के बाद ही खोला जाता है। बाजारों में खाने-पीने, कपड़ों और उपहारों के लुभावने सामानों की जैसे बाढ़ सी आ जाती है। ईद के अवसर पर लोग नमाज़ अदा करने मस्ज़िद जाते हैं।

मुसलमानों के अन्य मुख्य त्योहार ईद-उल-जुहा और मिलाद-उल-नबी हैं। मोहर्रम, पैगम्बर के पोतों इमाम हसन और हुसैन की शहादत की याद में मनाया जाने वाला शोक समारोह है।

बैसाखी उत्सव

भारत के सबसे उत्साहवर्धक त्योहारों में से एक है- बैसाखी, जिसका उद्गम पंजाब के उत्तरी राज्य से माना जाता है, जिसके लिए कहा जाता है कि देश के सबसे निर्भीक और उल्लास-प्रेमी लोग यहीं रहते हैं। बैसाखी का यह उत्सव वर्ष की पहली फ़सल (रबी फ़सल) के उत्पादन में की गई कड़ी मेहनत का प्रतीक माना जाता है।

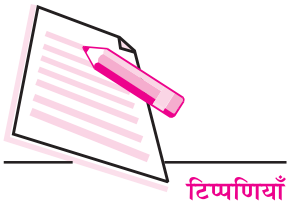

टिप्पणियाँ

महावीर जयंती

जैन पंथ के 24वें तीर्थंकर भगवान महावीर का जन्मदिन प्रदर्शनों के बजाय प्रार्थनाओं में समय बिता कर मनाया जाता है। ऐसे स्थान जहाँ जैन लोग बड़ी मात्रा में हैं, जैसे पुरानी दिल्ली और गुजरात, इस अवसर पर वहाँ शांतिपूर्ण जुलूस आयोजित किए जाते हैं, जिनमें बच्चे छोटे-छोटे नाटकों में भगवान महावीर के जीवन के अलग-अलग चरणों का चित्रण करते हैं। इस दिन को नए काम शुरू करने या अन्य सामाजिक गतिविधियों को आयोजित करने के लिए शुभ माना जाता है।

क्रिसमस

क्रिसमस, ईसाइयों का यह उत्सव, ईसा मसीह के जन्म से सम्बंधित है। क्रिसमस हर वर्ष 25 दिसम्बर को मनाया जाता है, इस दिन ईसाई लोग चर्च जाकर भजन एवं प्रार्थनाएँ करते हैं। लोग दूर स्थित अपने मित्रों और सगे सम्बंधियों को शुभकामनाएँ भेजते हैं। लोग अपने घरों को क्रिसमस के पेड़, जिस पर चमकदार लाल सजावटी बल्ब, घंटियाँ, तोरण, सिक्के और उपहार को मोज़ों में डालकर लटकाते हैं, इस तरह से वे पेड़ को सजाते हैं।

क्रिसमस के कुछ दिनों पहले से ही बाजारों में भारी भीड़ जमा हो जाती है। लोग नए वस्त्र, उपहार और सजावट का समान (अपने परिवार के लिए) खरीदते हैं।

केरल और तमिलनाडू में लोग विभिन्न मापों और रंगो वाले तारों जैसी आकृति के कागज़ से बने सुंदर दीयों को अपने घरों के बाहर लटकाते हैं। केरल में तारे की आकृति वाले दीयों पर कटवर्क डिज़ाइन या तरह-तरह के पैटर्न बने होते हैं।

क्रिसमस से एक सप्ताह पहले चर्च, क्लब और विद्यालयों की गायन- मंडली आस-पास के क्षेत्रों में जाना आरम्भ कर देती हैं और लोग उनका स्वागत केक और अन्य खाने-पीने की वस्तुओं से करते हैं। पूरे देश में क्रिसमस के गीत कई स्थानीय भाषाओं में गाए जाते हैं। क्रिसमस का सप्रेम गाया जाने वाला एक प्रसिद्ध गीत है - साईलेंट नाइट, होली नाइट, ऑल इज़ कम, ऑल इज़ ब्राइट। यहाँ हॉली - माँ और पुत्र को कहा गया है अर्थात् ईसा मसीह और उनकी माँ। यह बताना आवश्यक नहीं है कि सभी धार्मिक उत्सवों पर छुट्टी होती है। लोग इन त्योहारों को अपने परिवार के साथ मनाने के लिए अपने घर जाते हैं, जिस कारण भी देश में पर्यटकों की गतिविधियाँ बढ़ती हैं।

गुरुपर्व

गुरुपर्व सिख गुरुओं के जीवन से सम्बंधित होते हैं, ये सिख जीवन शैली के महत्वपूर्ण घटक हैं।

इस उत्सव के दौरान घरों में, गुरुद्वारों में गुरु ग्रंथ साहिब का पाठ किया जाता है। यह पाठ निरंतर 48 घंटों तक किया जाता है। ऐसी धारणा है कि ग्रंथ साहिब का व्याख्यान जिसे अखंड पाठ कहते हैं, बिना रुकावट के पूर्ण होना चाहिए। वास्तव में इस पाठ को पढ़ने वाले बारी-बारी से पाठ पढ़ते हैं और यह सुनिश्चित करते हैं कि पाठ में कोई विघ्न उत्पन्न न हो सके।

गुरुद्वारों में विशेष सभाएँ होती हैं और गुरुओं के जीवन एवं शिक्षाओं पर प्रवचन दिए जाते हैं। आप कस्बों और नगरों के जुलूसों में सिखों को पवित्र शब्दों को गाते हुए देख सकते हैं। प्रतिभागियों

के लिए सामुदायिक भोजन या विशेष लंगरों का आयोजन किया जाता है। इन अवसरों पर आयोजित लंगरों का हिस्सा होना सौभाग्य का सूचक माना जाता है। सार्वजनिक कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं। घर और गुरुद्वारों को रोशनी और दीप मालाओं से प्रकाशित किया जाता है। मित्र और परिवारगण एक दूसरे को शुभकामनाएँ देते हैं।

11.3.1 भारत के राष्ट्रीय उत्सव

राष्ट्रीय उत्सव किसी राष्ट्रीय महत्व की ऐतिहासिक घटना के घटित होने की याद में मनाए जाते हैं। ऐसे उत्सव भारतीय लोगों के मन में मजबूत देशभक्ति की भावना को प्रवाहित करते हैं। भारत में तीन राष्ट्रीय उत्सव मनाता है जिसके बारे में आप यहाँ पढ़ेंगे।

स्वतंत्रता दिवस (15 अगस्त 1947): 15 अगस्त के दिन का स्मरण करते हुए, जब भारत को आज़ादी प्राप्त हुई थी, स्वतंत्रता दिवस राज्य की राजधानियों, जिला मुख्यालयों, नगरों और गाँवों खास तौर पर लगभग प्रत्येक विद्यालय में झंडा फहरा कर और सांस्कृतिक कार्यक्रमों को आयोजित कर मनाया जाता है। दिल्ली में लाल किले पर प्रधानमंत्री का भाषण इस उत्सव का मुख्य आकर्षण है। इस दिन दिल्ली का आकाश हज़ारों पतंगों से अंकित किए हुए बिंदुओं के समान प्रतीत होता है।

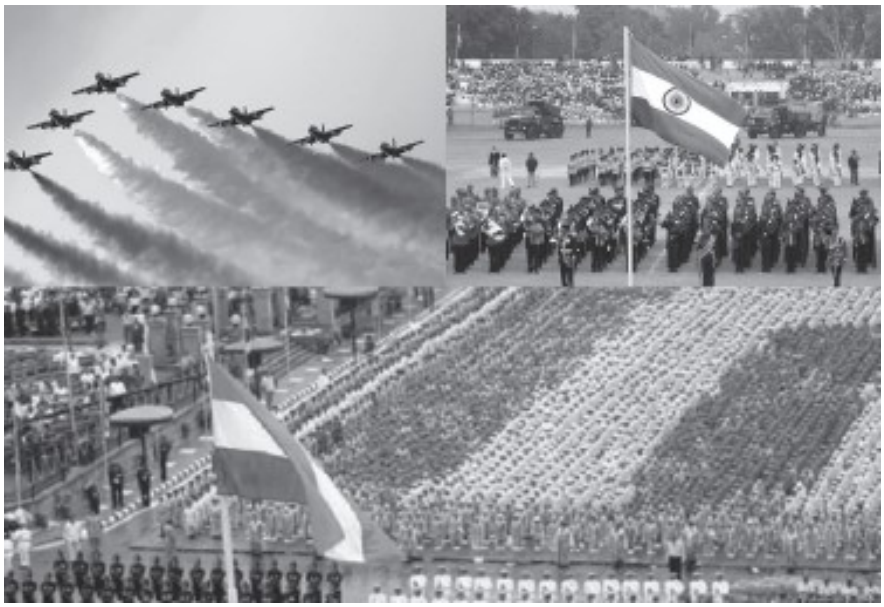

चित्र 11.2: पर्यटक आकर्षक राष्ट्रीय त्योहार

गणतंत्र दिवस – उस दिन को स्मरण करते हुए, जब भारत 26 जनवरी 1950 में गणतंत्र राज्य घोषित हुआ था। प्रत्येक वर्ष, इन कार्यक्रमों में सैनिक एकजुट होकर मार्च करते हैं उसके पश्चात् लोक नर्तक, स्कूल के बच्चे और विभिन्न राज्यों की झांकियाँ प्रदर्शित होती हैं। 29 जनवरी को दिल्ली के विजय चौक पर सैनिकों की वादक मंडली समापन समारोह (बिटिंग रिट्रीट) में वापसी का उद्घोष कर इस उत्सव की समाप्ति को अंकित करती है।

गांधी जयंती: राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के जन्मदिवस की वर्षगांठ, जिनका जन्म 2 अक्टूबर सन् 1869 में हुआ था।

राष्ट्रीय उत्सवों का भव्य आयोजन देश की राजनीतिक एवं सामाजिक-संस्कृतियों के परिदृश्यों का प्रदर्शन करता है। ये पर्यटकों को आकर्षित करता है।

11.3.2 अन्य उत्सव

हेमिस उत्सव, लद्दाख, जम्मू-कश्मीर

यह एक धार्मिक उत्सव है और भारत के बौद्ध मठों के लिए शुभ अवसरों में से एक है। हेमिस गोम्पा का आंगन लद्दाख का सबसे बड़ा बौद्ध मठ है, यह प्रसिद्ध हेमिस उत्सव का स्थान है, जहाँ गुरु पद्मसम्भव के जन्मदिवस का उत्सव मनाया जाता है। स्थानीय लोग इस अवसर पर अपनी परम्परागत पोशाक पहनते हैं। लामा जिन्हे 'छाम' कहा जाता है, झांझ, ड्रम और लम्बे सींगों के साथ आकर्षक मुखौटे लगाकर नृत्य एवं पवित्र नाटक करते हैं। मुख्य लामा कार्यक्रम की अध्यक्षता करता है। यह उत्सव तिब्बती वर्ष के अनुसार प्रत्येक 12 साल में मंगल रुख करता है, जब दो मंजिल ऊँचा 'थंका' पद्मसम्भव के चित्र को प्रदर्शित करता है।

चन्द्रभागा मेला

चन्द्रभागा मेला, जिसे 'मघा सप्तम मेला' के नाम से भी जाना जाता है, फरवरी के आस-पास खंडगिरि, भुवनेश्वर, उड़ीसा में आयोजित होने वाला विशाल मेला है। प्रत्येक वर्ष पूर्णिमा के दौरान पवित्र चंद्रभागा नदी पर प्रमुख मेले और उत्सव का आयोजन किया जाता है। सात दिवसीय मेले के दौरान हजारों श्रद्धालु पवित्र नदी चंद्रभागा में स्नान के लिए एकत्रित होते हैं।

कुंभ मेला

माघ मेला, कुभ मेला, अर्ध कुंभ मेला, गंगा दशहरा, त्रिवेणी महोत्सव आदि सामूहिक तीर्थाटन है, इन अवसरों पर हिंदू गंगा और गोदावरी नदी पर एकत्रित होते है, जहाँ पाप से मुक्ति पाने के लिए स्नान करना पवित्र धार्मिक नियम माना जाता है। 'पाप मुक्त शाश्वत जीवन' यह संकल्प कुंभ मेले के विशाल उत्सव से जुड़ा है। यह ऐसा संकल्प है जिससे लाखों लोग जुड़ना चाहते हैं। इस संकल्प के कारण ही कुंभ मेला आज भी उतना ही महत्वपूर्ण है।

कुंभ मेले के साथ एक रोचक कहानी जुड़ी हुई है। ऐसी मान्यता है कि पौराणिक समय में देवताओं एवं राक्षसों ने अमृत भरा कुंभ पाने के लिए समुद्र का मंथन किया था। धनवंतरी, एक वैद्य, अमृत से भरा कलश अपने हाथों में लेकर प्रकट हुए थे, कलश को हथियाने के लिए देवताओं और राक्षसों में भयंकर युद्ध हुआ। भयंकर युद्ध के दौरान आकाश से अमृत की कुछ बूँदें चार अलग-अलग स्थानों, हरिद्वार, नासिक, प्रयाग, उज्जैन में गिर गईं। यह माना जाता है कि ये बूँदें इन स्थानों को कोई रहस्यमयी शक्ति प्रदान करती हैं। यह कुंभ मेला स्वयं को उन शक्तियों को प्राप्त कराने के लिए इन चारों स्थानों में से प्रत्येक पर चिरकाल से आयोजित किया जाता है।

चित्र 11.3 : कुंभ मेला

कच्छ उत्सव

जब गुजरात में शिवरात्रि मनाई जाती है, तब यह उत्सव कच्छ में मनाया जाता है। यहाँ रंग-बिरंगी पोशाकों में नर्तक, संगीत कार्यक्रम, सिंधी भजन कार्यक्रम होते हैं। लांगा मरु संगीत और दुकानों पर बेचे जाने वाले कढ़ाईदार वस्त्र और आभूषण पर्यटकों को आकर्षित करते हैं।

मेवाड़ उत्सव, उदयपुर, राजस्थान

यह वसंत ऋतु के आगमन को स्मरण कर राजस्थानी गीत, नृत्य, भक्ति संगीत, जुलूस और आतिशबाजी का प्रदर्शन कर मनाया जाता है। यह गंगौर उत्सव के दौरान मनाया जाता है। इस उत्सव में रंग बिरंगे वस्त्र पहन कर, माँ गौरी का चित्र लिए महिलाएँ एक जुलूस के रुप में उदयपुर की पिचोला झील की ओर जाती हैं। पर्यटक झील पर नौकाओं का एक असामान्य जुलूस भी देखते हैं।

पूरम त्रिशूर, केरल

केरल के मंदिर में होने वाले उत्सवों में से सर्वाधिक मनोहर उत्सव पूरम माना जाता है। आमतौर पर यह उत्सव अप्रैल में त्रिशूर के भगवान शिव को समर्पित वडक्कमनाथन मंदिर में मनाया जाता है। इस उत्सव में आतिशबाजी का भव्य प्रदर्शन, छतरी प्रदर्शन प्रतियोगिता और भव्य गज जुलूस शामिल है। केरल के कई मंदिरों से राज्य के सर्वश्रेष्ठ हाथी पूरम उत्सव में भाग लेने के लिए त्रिशूर भेजे जाते हैं। हर स्थान से, विशेषकर केरल जिसे देवताओं की भूमि कहा जाता है, में लोगों का इस उत्सव में शामिल होना आश्चर्यजनक नहीं है।

ओणम

केरल का एक अन्य उत्सव ओणम है जो फसल के मौसम का आगमन दर्शाता है। ओणम का उत्सव 10 दिनों तक चलता है। लोग नए वस्त्र पहनते हैं और मंदिरों में जाकर प्रार्थनाएँ करते हैं। लड़कियाँ पीतल के दीपक के चारों ओर नाचते हुए खुले में कलकोटिकलि नृत्य का प्रदर्शन करती हैं। इसका मुख्य आकर्षण चम्पकुलम, अरनमूला और कोट्टयम के अप्रवाही पानी में प्रसिद्ध 'सांप नौका दौड़' है। प्रत्येक नाव में सैकड़ों मल्लाह इस बड़ी और सुशोभित सर्प नौका को नगाड़ों और झांझ की ताल पर महाबली शासन की प्रशंसा करते हुए गीतों को गाते हुए खेते हैं। पूरे राज्य में अलग-अलग जगहों पर सांस्कृतिक कार्यक्रम होते हैं।

गंगा दशहरा, उत्तर भारत

इस माह के दस दिन माँ और देवी के रूप में पूजी जाने वाली गंगा नदी के पूजन हेतु हिंदुओं द्वारा समर्पित किए जाते हैं। इस अवसर पर नदियों के तट पर स्थित स्थान, जैसे ऋषिकेश, हरिद्वार, गढ़ मुक्तेश्वर, प्रयाग, वाराणसी आदि विशेष महत्व रखते हैं। श्रद्धालुओं की टोलियाँ इन स्थानों की पवित्र नदी में स्नान करने के लिए आती हैं। हरिद्वार में देश के कई भागों से भारी संख्या में श्रद्धालु संध्या समय पर की जाने वाली आरतियों का दर्शन करने एवं नदी किनारे ध्यान लगाने आते हैं।

अमरनाथ यात्रा

तीर्थयात्री कश्मीर में हिमाचल की ऊँची पहाड़ियों के बीच, इस स्थान पर, जहाँ भगवान शिव ने अपनी पत्नी पार्वती को मुक्ति का रहस्य समझाया था, की यात्रा करते हैं। यह बहुत ही दुर्गम क्षेत्र है। केवल पूरी तरह से स्वस्थ लोग ही इस स्थान की यात्रा कर सकते हैं।

खजुराहो नृत्य उत्सव, बुंदेलखंड, मध्यप्रदेश

खजुराहो अपने भव्य मंदिरों के लिए जाना जाता है। आमतौर पर 25 फरवरी से 2 मार्च तक यहाँ शास्त्रीय नृत्य का खजुराहो उत्सव आयोजित किया जाता है। नर्तक, सूर्य देव को समर्पित चित्रगुप्त मंदिर और भगवान शिव को समर्पित विश्वनाथ मंदिर के प्राय: सामने स्थित खुले रंगभवन में प्रदर्शन करते हैं। स्थानीय शिल्पकार खुले बाज़ार में अपना शिल्प प्रदर्शित करते हैं।

बीहू, असम

बीहू या बोहाग बीहू असम के लोगों का सबसे महत्वपूर्ण उत्सव है। यह मध्य अप्रैल में वसंत के स्वागत के लिए मनाया जाता है। प्रथम दिवस पर पशु उत्सव मनाया जाता है। दूसरे दिन, विशेष बीहू व्यंजन के साथ पूर्वजों, सगे-सम्बंधियों और मित्रगणों का आदर-सत्कार किया जाता है। तीसरा दिन अन्य धार्मिक सेवाओं के लिए निश्चित किया जाता है। खेल-कूद, बीहू विशेष नृत्य और

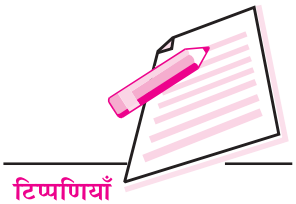

संगीत, मेले आदि बीहू उत्सव के मुख्य भाग हैं। असम के लोग भी जनवरी में माघ बीहू और अक्टूबर में कटी बीहू मनाते हैं।

रथ यात्रा, उड़ीसा

यह अदभुत रथ उत्सव पुरी के प्रसिद्ध जगन्नाथ मंदिर में 8 दिनों तक मनाया जाता है। भगवान जगन्नाथ, उनकी बहन सुभद्रा और भाई बलभद्र के चित्र तीन विशाल रथों में रखकर एक जुलूस में ले जाए जाते हैं। हजारों श्रद्धालु इन रथों को खींचकर 3 किलोमीटर दूर गुंड़ीचा मंदिर तक ले जाते हैं। एक सप्ताह बाद, देवताओं की प्रतिमाएँ वैसे ही जुलूस में मुख्य मंदिर की ओर लौट जाती हैं। इसमें प्रयोग होने वाले रथों का निर्माण अप्रैल में ही आरम्भ हो जाता है।

क्रियाकलाप 11.1

अपने अनुसार किसी धर्म का चयन करें। इस धर्म के लोग अपने त्योहारों को मनाने के लिए क्या-क्या करते हैं, जैसे कौन-से रीति-रिवाज़ अपनाते हैं? क्या व्यंजन बनाते हैं? इन सभी की सूची तैयार करें।

पाठगत प्रश्न 11.1

क. सही विकल्प का चुनाव करें-

1. ऐसा कार्यक्रम, जो आमतौर पर स्थानीय समुदायों द्वारा आयोजित किया जाता हो, जो उस समुदाय के किसी विशिष्ट पहलू पर केंद्रित होकर मनाया जाता है, उस उत्सव को कहा जाता है :

   क. परंपरा ख. त्योहार ग. संस्कृति घ. मेला

2. लोगों का समूह जो किसी वस्तु का व्यापार करने अथवा प्रदर्शन करने, पशुओं का जुलूस अथवा प्रदर्शन करने के लिए एकत्रित हो और इससे आमतौर पर मनोरंजन जुड़ा हुआ हो, इसे कहेंगे-

   क. मेला ख. भोज ग. परंपरा घ. त्योहार

3. कौन-सा त्योहार धर्म उत्सव, मनोरम, खुशी और उल्लास से भरपूर गतिविधियों का मिश्रण है?

   क. गुरुपर्व ख. बैसाखी ग. क्रिस्मस घ. रक्षा बंधन

4. उस राज्य का नाम बताइए जहाँ निम्नलिखित त्योहार मनाए जाते हैं?

   क. बीहु ख. बैसाखी ग. रथ यात्रा घ. कच्छ

11.4 मेले: पर्यटक आकर्षण

भारत एक व्यापक और बहुसांस्कृतिक देश है। यह अनेक मेलों का भी देश कहा जाता है जो भारतीय व अंतर्राष्ट्रीय पर्यटकों को आकर्षित करता है। मेले पर्यटक आकर्षण का महत्पूर्ण स्रोत माने जाते हैं क्योंकि यहाँ उत्सव, मनोरंजन, उत्साह, दर्शनीय कार्यक्रमों के रूप में स्थानीय सामाजिक-सांस्कृतिक आकर्षणों का प्रदर्शन किया जाता है। हम यहाँ कुछ मुख्य अंतर्राष्ट्रीय मेलों के बारे में पढ़ेंगे जो प्रत्येक वर्ष दर्शकों की भारी भीड़ को आकर्षित करते हैं।

ये मेले न केवल आनंद और आमोद-प्रमोद का कारण बनते हैं वरन् देश की अर्थव्यवस्था में भी मदद करते हैं। अत: पर्यटक इन मेलों के आसपास हों तो उन्हें देखने के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए।

भारत में बहुत से मेले धार्मिक होते हैं या ऋतुओं के परिवर्तन पर लगाए जाते हैं। महत्वपूर्ण तीर्थस्थलों पर कई बड़े मेले लगते हैं। कुंभ का मेला विश्व के सभी धार्मिक मेलों में से सबसे बड़ा मेला है जो भारत के चार तीर्थस्थानों पर आयोजित किया जाता है। भारत में अन्य बड़े धार्मिक मेले हैं- पुष्कर मेला, बानेश्वर मेला, गंगासागर मेला, तरणेतर मेला, चैत्र चौदस मेला, नागुर मेला , अन्य मानसून त्योहार व मेले। कलकत्ता वार्षिक पुस्तक मेला पुस्तकों का तीसरा बड़ा तथा विश्व का सबसे बड़ा गैर-व्यापार पुस्तक मेला है। पटना के पास लगने वाला लोकप्रिय पशु मेला एशिया और विश्व का सबसे बड़ा पशु मेला है।

पुष्कर मेला

यह राजस्थान के प्राचीनतम शहर पुष्कर में अक्तूबर-नवंबर के मध्य लगने वाले विश्व के सबसे बड़े ऊँट मेलों में से एक है। यह विश्व भर से दर्शकों को आकर्षित करता है, विशेष रूप से इज़राइल के पर्यटकों को। यहाँ कई मज़ेदार प्रतियोगिताएँ होती हैं, जैसे- मटका फोड़ प्रतियोगिता, लंबी मूंछ प्रदर्शन की प्रतियोगिता। हॉट एयर बैलून जैसे अनुभवों का मज़ा भी पर्यटक लेते हैं। लोग यहाँ ऊँटों की दौड़ देखने, तंबू लगाने और अन्य कार्यक्रमों के लिए भी एकत्रित होते हैं।

चित्र 11.4 : ऊँट मेला

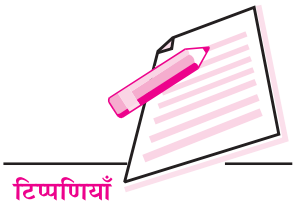

रेगिस्तानी त्योहार

जैसलमेर और नागौर के रेगिस्तानी त्योहार अन्य लोकप्रिय त्योहार हैं जो पर्यटकों को आकर्षित करते हैं। जैसलमेर में तीन दिन तक इस उत्सव को रंगों, संगीत और उत्साह के माहौल में मनाया जाता है। यहाँ आने वाले पर्यटक पारंपरिक गीतों पर गैर व अग्नि नृत्यों, ऊँट की सवारी व ऊँट का नृत्य देखने का आनंद लेते हैं। यहाँ पगड़ी बाँधने की प्रतियोगिता भी होती है। बहुत से लोक नर्तक यहाँ अपनी कला का प्रदर्शन करते हैं। यहाँ सपेरे, कठपुतली का नृत्य दिखाने वाले तथा नट भारतीय व अंतर्राष्ट्रीय पर्यटकों का मनोरंजन करते हैं।

सोनपुर मेला

सोनपुर मेला विश्व का एकमात्र ऐसा मेला है। यहाँ लगने वाला हाथी बाज़ार यहाँ का मुख्य आकर्षण केंद्र है, जहाँ हाथियों का व्यापार किया जाता है। इसके अलावा यहाँ भैंसों, गधों, खच्चरों और पक्षियों का भी व्यापार होता है। यह भारत का सबसे बड़ा पशु मेला है जो एशिया के सभी लोगों को आकर्षित करता है।

अंबुवासी मेला

यह तीन-दिवसीय पारंपरिक मेला हर वर्ष मानसून के समय असम में गुवाहाटी स्थित कामाख्या मंदिर में लगता है। देश के विभिन्न स्थानों से श्रद्धालु इस मेले में भाग लेने के लिए आते हैं।

बानेश्वर मेला

फरवरी माह में राजस्थान के डुंगरपुर जिले का आदिवासियों का प्रसिद्ध मेला है। यह एक धार्मिक मेला है जहाँ सादे व पारंपरिक रीति-रिवाज़ों से शिव की साधना की जाती है। यह मेला पड़ोसी राज्यों के बड़ी संख्या के आदिवासियों के लिए आकर्षण का केंद्र है। यह बहुत लोकप्रिय पर्यटक स्थल बनता जा रहा है। इसको मनाने का आदिवासी तरीका अन्यों से बहुत अलग है और यह देखने योग्य है।

गोआ कार्निवल

गोआ घूमने के लिए दिसंबर, जनवरी और फरवरी का महीना सबसे अच्छा रहता है। यह एक सुंदर राज्य है और बड़ी संख्या में ईसाई रहते हैं। इसमें कोई आश्चर्य नहीं कि क्रिसमस यहाँ बड़े धूमधाम से मनाया जाता है। गोआ कार्निवल यहाँ का महत्वपूर्ण मेला माना जाता है। मौज-मस्ती, रचनात्मकता, संगीत, नृत्य और अच्छा भोजन इस कार्निवल का महत्वपूर्ण हिस्सा है। बैंड-बाजों, नृत्यों, गिटार पर संगीत व भरपूर ज़ोर-शोर से पूरे राज्य में एक परेड निकाली जाती है। निश्चय ही यह पर्यटकों के लिए बहुत लोकप्रिय है। इसमें सर्कस के तत्व, मुखौटे और सार्वजनिक खुली पार्टियाँ की जाती हैं। आमतौर पर लोग इस उत्सव के दौरान मुखौटे लगाते हैं। इस कार्निवल में भारत व विश्व-भर से पर्यटक आते हैं।

सूरजकुंड क्राफ्ट मेला

यह देश का मुख्य पर्यटक आकर्षण है। यह हरियाणा राज्य के फरीदाबाद जिले के सूरज कुंड में प्रत्येक वर्ष 1 से 15 फरवरी तक आयोजित किया जाता है। यहाँ भारत–भर के प्रतिभावान कालाकारों की कलाकृतियों का प्रदर्शन किया जाता है। यहाँ अधिकतर वस्तुएँ खरीदने लायक और सस्ती होती हैं। इसमें कोई आश्चर्य नहीं है कि लाखों दर्शक इस मेले का हिस्सा बनते हैं।

ताज महोत्सव, आगरा, उत्तर प्रदेश

दस दिवसीय, ताज महोत्सव भारतीय शिल्प कलाओं और सांस्कृतिक विविधताओं को एक साथ प्रदर्शित करने का एक जीवंत माध्यम है। प्रत्येक वर्ष शिल्पग्राम में होने वाला 18 फरवरी से शुरू होने वाले इस महोत्सव का बेसब्री से इंतज़ार किया जाता है। यहाँ भारत की व्यापक कलाएँ, शिल्प कलाओं व संस्कृतियों का प्रदर्शन किया जाता है। लोक संगीत, शायरी और शास्त्रीय नृत्य कलाओं के साथ–साथ हाथी और ऊँट की सवारी, खेल और भोजन उत्सव जैसे सभी प्रकार के उत्सव इसका भाग हैं।

अंतर्राष्ट्रीय योग सप्ताह, ऋषिकेश, उत्तरांचल

योग का शाब्दिक अर्थ है– एकता– श्वास और शरीर की, मस्तिष्क और मांसपेशियों की और सर्वप्रमुख आत्म की परमात्मा से एकता। योग के प्राचीन विज्ञान को बढ़ावा देने के लिए गंगा नदी के तट पर फरवरी–मार्च के माह के दौरान ऋषिकेश के पर्यटन विभाग द्वारा एक सप्ताह लंबे कार्यक्रम का आयोजन किया जाता है। विस्तृत व्याख्यान, योग के अनेक महत्वपूर्ण आसनों का प्रदर्शन इस योग सप्ताह के मुख्य आकर्षण हैं। विश्व में योग की बढ़ती लोकप्रियता के चलते बहुत से पर्यटकों का इसमें भाग लेने और योग सीखने के लिए आना आश्चर्यजनक बात नहीं।

हाथी महोत्सव, जयपुर, राजस्थान

प्रत्येक वर्ष होली से एक दिन पहले, हाथी महोत्सव का आयोजन किया जाता है। इस उत्सव में गहनों और मखमली कार्य वाले वस्त्रों से सजे–धजे व रंगे हाथियों, ऊँटों और घोड़ों का जुलूस निकाला जाता है जिसमें इनकी सवारियों के पीछे लोक नर्तक नाचते हुए जाते हैं। ये सजे–धजे हाथी विशेषज्ञों के आने से और सर्वश्रेष्ठ–सज्जित हाथी के चयन से पहले दर्शकों का स्वागत करते हैं, अतिथियों को फूल–मालाएँ देते हैं और रैंप पर चलते हैं। हाथी दौड़ और हाथियों का पोलो मैच विशेष आकर्षण होते हैं। इस उत्सव का सबसे रोमांचक आकर्षण है– व्यक्ति और हाथी में होने वाला युद्ध।

सिंधु दर्शन उत्सव, लेह, लद्दाख, जम्मू और कश्मीर

सिंधु दर्शन उत्सव सिंधु नदी के उत्सव के रूप में मनाया जाता है, जिसका उद्गम तिब्बत स्थित मानसरोवर झील से हुआ। इस उत्सव में भारत के विभिन्न राज्यों से लोग देश की पवित्र नदियों से मिट्टी के बर्तन में जल लाते हैं और एकत्रित जल को सिंधु नदी में विसर्जित करते हैं। इससे इस नदी का जल अन्य स्थानों से आए जल से मिल जाता है।

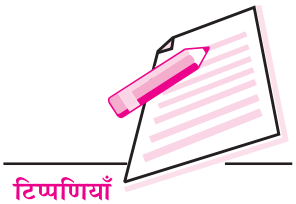

राष्ट्रीय पतंग महोत्सव, अहमदाबाद, गुजरात

मकर सक्रांति के दिन, अहमदाबाद में आसमान में रंग-बिरंगी व विभिन्न आकारों वाली पतंगें उड़ती दिखाई देती हैं। रात के समय उड़ाई जाने वाली कुछ विशेष प्रकार की पतंगों के अंदर दीया जला दिया जाता है जो रात्रि में आसमान को उज्ज्वलित करता है। गुजरातियों के विशेष पकवान, हस्तकलाओं का प्रदर्शन, लोक कला इस उत्सव में चार-चाँद लगा देते हैं जो पर्यटकों को आकर्षित करते हैं।

चंपाकुलम नौका दौड़, केरल

चंपाकुलम नौका दौड़ से केरल में नौका-दौड़ का मौसम शुरू होता है। चंपाकुलम के सीरिन गाँव में पंबा नदी पर यह नौका दौड़ आयोजित होती है। इस क्षेत्र में आयोजित सर्प नौका दौड़ में धैर्य, फुर्ती और योग्यता की कठिन परीक्षा होती है। प्रत्येक नाव में 90-100 नाव खेने वाले होते हैं जो इस दौड़ में भाग लेने से पहले कई दिनों का कठिन प्रशिक्षण प्राप्त करते हैं।

भारत में अन्य लोकप्रिय मेले

रासमेला (बिलासिपारा, असम) ब्रह्मोत्सव (तिरूपति, आंध्र प्रदेश), सोनपुर मेला (सोनपुर, बिहार), सोमनाथ मेला (पटना, गुजरात), गंगोर मेला (सिरसा, हरियाणा), सूरजकुंड मेला (सूरजकुंड, हरियाणा), किसान मेला (करनाल, हरियाणा), देहाती मेला (लदाना, हरियाणा), मिंजार मेला (चंबा, हिमाचल प्रदेश), दशहरा (कुल्लु, हिमाचल प्रदेश), झिरी मेला (झिरी, जम्मू और कश्मीर), कुंडा मेला (परातापुर, झारखंड), दसारा (मैसूर, कर्नाटक), गोडाची मेला (गोडाची, कर्नाटक), हंपी उत्सव (हंपी, कर्नाटक), पूरम उत्सव (त्रिचूर, केरल), मक्कर विलाकु (मालाप्पुरम, केरल), चिरप्पू (कोट्टायम, केरल), ओमाल्लोर मेला (ओमाल्लोर केरल), मगर ज्योति (सबरीमाला, केरल), श्री सुंदरेश्वर (कन्नौर, केरल), उत्सवम (मल्लापुरम, केरल), अरणमुल्ला वालमकली (अरणमुला, केरल), केरल गाँव मेला (कोव्वलम, केरल), कार्तिक मेला (उज्जैन, मध्य प्रदेश), कदम मेला (खड़गपुर, मध्य प्रदेश), ग्वालियर व्यापार मेला (ग्वालियर, मध्य प्रदेश), मकर सक्रांति (उज्जैन, मध्य प्रदेश), निमर उत्सव (महेश्वर, मध्य प्रदेश), कुंभ मेला (नासिक, महाराष्ट्र), शारदा उत्सव (नागपुर, महाराष्ट्र), गणेश महोत्सव (सांगली, महाराष्ट्र), रथ यात्रा (पुरी, ओडिशा), जोरंडा मेला (जोरंडा, ओडिशा), धनु जत्र (बरघर, ओडिशा), बलि यात्रा (कटक, ओडिशा), छत्र यात्रा (कालाहांडी, ओडिशा), ग्रामीण औलंपिक्स (किला रायपुर, पंजाब), होला मोहल्ला (आनंद पुर साहिब), बैसाखी (तलवंडी साहिब, पंजाब), मगही मेला (मुक्तसर, पंजाब), रमतीर्थ मेला (कलेर, पंजाब), शहीदी जोड़ मेला (फतेहगृह साहिब, पंजाब), सोडल मेला (जलंधर, पंजाब), छप्पर मेला (छप्पर, पंजाब), खाटू श्यामजी (सीकर, राजस्थान), गंगौर महोत्सव (जयपुर), उर्स (अजमेर, राजस्थान), पुष्कर मेला (पुष्कर, राजस्थान), रामदेवर (रामदेवर, राजस्थान), दशहरा मेला (कोटा, राजस्थान), बनेश्वर मेला (डंगरपुर, राजस्थान), चंद्रभग मेला (झालावार, राजस्थान), खेतलाजी मेला (बुंदी, राजस्थान), रानीसती मेला (झुनझुनु, राजस्थान), कालिया देवी मेला (करौली, राजस्थान), कालाजी का मेला (बंस्वारा, राजस्थान), मारवाड़ महोत्सव (जोधपुर, राजस्थान), पेरिया कीर्थगल (तिरूपरंकुंदरम, तमिलनाडु), पानीमाया मथा महोत्सव (टूटीकोरिण तमिल नाडु), बेमोली कटरा मेला (बेमोली कटरा, उत्तर प्रदेश), कैलाश मेला (आगरा, उत्तर प्रदेश), मकर सक्रांति (इलाहाबाद, उत्तर प्रदेश), कुंभ मेला (हरिद्वार उत्तर प्रदेश), बारबंकी मेला (देव बारबंकी उत्तर प्रदेश), राम नवमी मेला (अयोध्या, उत्तर प्रदेश), श्रावण झूला (फैज़ाबाद, उत्तर प्रदेश), नौचंदी

मेला (मेरठ उत्तर प्रदेश), चित्रकूट रामलीला (चित्रकूट, उत्तर प्रदेश), रामबारात (आगरा, उत्तर प्रदेश), पशु मेला (दादरी, उत्तर प्रदेश), गोकुलानंद मेला (गोकुलपुर, पश्चिम बंगाल), सक्रांति मेला (गंगानगर, पश्चिम बंगाल), फूल वालों की सैर, पुस्तक और व्यापार मेले दिल्ली आदि।

क्रियाकलाप 11.2

किसी भी प्रमुख मेले का चयन करें जहाँ आप गए हों। उन चीज़ों की सूची बनाइए जो आपने वहाँ देखी। उनमें से आपके अनुसार पर्यटकों के लिए मुख्य आकर्षण की चीज़ें कौन सी होंगी?

पाठगत प्रश्न 11.2

1. **सही विकल्प पर निशान लगाइए–**

   (i) सोनपुर मेला किस रूप में लोकप्रिय है–

   क. पशु मेला ख. पुस्तक मेला ग. ऊँट मेला घ. आम मेला

   (ii) भारत में सबसे बड़ा धार्मिक मेला है–

   क. गोआ कार्निवल ख. पुष्कर मेला ग. कुंभ मेला घ. मकर सक्रांति

2. मेलों को पर्यटकों के लिए आकर्षण का केन्द्र क्यों माना जाता है?

3. पर्यटकों के लिए कुंभ का महत्व बताइए।

4. गोआ कार्निवल अंतर्राष्ट्रीय पर्यटक आकर्षण क्यों माना जाता है?

11.5 पर्यटक आकर्षण के रूप में कार्यक्रम

नृत्य और संगीत सदैव पर्यटकों द्वारा सबसे अधिक पसंद किया जाता है। इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं है कि देश भर में वर्ष भर नृत्य महोत्सव होते रहते हैं। भारतीय नृत्य सभी जगह बहुत लोकप्रिय हैं। ऐसा इसलिए भी हो सकता है कि जो भारतीय विदेश जाकर बस गए हैं उन्होंने इसे विश्व भर में लोकप्रिय बना दिया हो। यह आश्चर्य की बात नहीं है कि भारतीय और विदेशी पर्यटक नृत्य महोत्सव का हिस्सा बनते हैं। कुछ लोकप्रिय नृत्य और संगीत उत्सव हैं– ओड़िसा का कोणार्क नृत्य उत्सव, मध्य प्रदेश का खुजराहो नृत्य उत्सव और चेन्नई नृत्य और संगीत महोत्सव।

शास्त्रीय और क्षेत्रीय नृत्य जैसे भरतनाट्यम (तमिल नाडु), कथक (राजस्थान, पंजाब, दिल्ली, उत्तर प्रदेश), कथकली (केरल), कुचिपुड़ी (आंध्र प्रदेश), मणिपुरी (मणिपुर), मोहिनीअट्टम (केरल), ओडिसी (ओडिशा), सत्रिया (असम), गरबा और डांडिया (गुजरात) और भांगड़ा (पंजाब) आदि भारत के पर्यटक आकर्षणों में महत्वपूर्ण हैं।

11.5.1 भारत के लोकप्रिय नृत्य रूप

भारत अपनी संस्कृति, परंपरा और भाषा की विविधताओं के कारण जाना जाता है। भारत की प्राचीन संस्कृति में शास्त्रीय नृत्य रूपों का 2000 वर्षों का एक लंबा इतिहास है। अधिकतर नृत्य मंदिरों में प्रतिमाओं के सामने किए जाते थे, कभी-कभी राजा के दरबार में आए अतिथियों के सामने भी नृत्य किए जाते थे। उदाहरणस्वरूप कथक मुगल राजदरबार में किया जाने वाला प्रचलित नृत्य था।

भारत के अधिकतर शास्त्रीय नृत्य दूसरी और तीसरी सदी में विकसित हुए। भारत में, शास्त्रीय नृत्यों के आठ प्रमुख नृत्य बहुत लोकप्रिय हैं जिन्हें अधिक मात्रा में जनता द्वारा देखा जाता था। वे हैं- भरतनाट्यम, कथक, कथकली, कुच्चीपुड़ी, मणिपुरी, मोहिनीअट्टम, ओडिसी और सत्रिया।

भरतनाट्यम

इस शास्त्रीय नृत्य का उद्गम भारत के तमिलनाडु में 18वीं सदी के अंत तथा 19वीं सदी के आरंभ में हुआ।

भरतनाट्यम को व्यापक रूप से सराहना मिली और एक अच्छा भरतनाट्यम नर्तक वही बन सकता था जो बिना किसी शर्त के व अविभाज्य होकर इसके प्रति समर्पित हो जाए।

आरंभ के दिनों में इसे 'दासीयत्तम' कहा जाता था, क्योंकि तब तमिलनाडू के मंदिरों में देवदासियाँ इसे किया करती थीं। भरतनाट्यम की उत्पत्ति तीन मूलभूत विषयों भाव, राग और ताल से हुई है। इसे करते समय जो संगीत बजाया जाता है वह कर्नाटकी शास्त्रीय संगीत पर आधारित है। इस नृत्य को करते समय मुख्य रूप से मृदंगम, वीणा, बाँसुरी और सारंगी वाद्य यंत्रों का प्रयोग किया जाता है।

चित्र 11.5: भरतनाट्यम

कथक

इस शास्त्रीय नृत्य को आरंभ में उत्तर भारत के मंदिरों में एक रीति की तरह किया जाता था परंतु बाद में यह मुगल और फ़ारसियों के प्रभाव में आकर राज-दरबार में मनोरंजन के लिए किया जाने लगा।

कथक शब्द की व्युत्पत्ति कथा (कहानी सुनाना) शब्द से हुई है। यह नृत्य शैली प्राचीन समय में कथा सुनाने की प्रक्रिया के ईद-गिर्द घूमती है और इस नृत्य में कलाकार अपने चेहरे के हाव-भाव व हाथों की क्रियाओं पर मुख्य रूप से ध्यान देता है। इस नृत्य के प्रदर्शन में आत्मीय संगीत व पारंपरिक वाद्य यंत्र भी बजाए जाते हैं।

चित्र 11.6 : कथक

कथकली

यह केरल की अद्भुत नृत्य शैली है, जिसका प्रदर्शन मंदिरों में हिंदू ग्रंथों, जैसे रामायण, महाभारत और पुराणों की कथाओं पर किया जाता है।

नर्तक इसे करते समय बड़े-बड़े मुखौटे पहनते हैं, काफी श्रृंगार करते हैं और विशेष प्रकार की वेशभूषा पहनते हैं। नर्तक इसमें रंगबिरंगा घाघरा और शिरोभूषण पहनते हैं। कथकली में कलाकारों के तीन समूह भाग लेते हैं- नर्तक, गायक और तालवादक। नर्तक नृत्य करते समय विभिन्न प्रकार की भूमिकाएँ निभाता है जैसे राजा, ईश्वर, असुर, पशु, पुजारी आदि।

अपनी बात दर्शकों से कहने के लिए नर्तक चेहरे के हाव-भाव, हाथों की मुद्राओं और नैनों के हाव-भाव से व्यक्त करता है। कथकली के नर्तक तीन अलग-अलग नगाड़ों- सीना, इडक्क, मद्दलम पर नृत्य करते हैं। इन तीनों से अलग-अलग प्रकार की ध्वनि निकलती है।

चित्र 11.7: कथकली

कुचिपुड़ी

यह नृत्य आंध्र प्रदेश से उत्पन्न हुआ है। आरंभ में इसे ब्राह्मण पुरुषों जिन्हें भगवथालु कहा जाता है, द्वारा मंदिरों में किया जाता था। इस नृत्य शैली को रात के समय खुली हवा में या तात्कालिक मंच पर किया जाता है। नर्तक रंगबिरंगी पोशाकें पहनते हैं, शृंगार करते हैं और भारी आभूषण पहनते हैं। इस नृत्य के दौरान शास्त्रीय संगीत कर्नाटक बजाया जाता है। इस नृत्य के दौरान मुख्य वाद्य यंत्रों के रूप में मृदंगम, सारंगी और शहनाई को बजाया जाता है।

चित्र 11.7: कुचिपुड़ी

मणिपुरी

मणिपुरी नृत्य मणिपुर का शास्त्रीय नृत्य है। यह भारत की प्राचीनतम शास्त्रीय नृत्य शैली है। और अभिलेखों से पता चलता है कि यह 100 ईसवीं पुरानी शैली है। अन्य शास्त्रीय नृत्यों की तुलना में मणिपुरी नृत्यों की मुद्राएँ धीमी और शोभित हैं। हाथों व पैरों की सौम्य मुद्राएँ इस शैली को

अन्य शास्त्रीय नृत्यों से भिन्न करती है। मणिपुरी नृत्य में प्रयोग में लाया जाने वाला वाद्ययंत्र मणिपुरी ढोलक है।

चित्र 11.9: मणिपुरी

मोहिनीअट्टम

यह नृत्य केरल का है। मोहिनीअट्टम का अर्थ है मोहिनी का नृत्य। भारतीय पौराणिक कथाओं के अनुसार, असुर भस्मासुर का वध करने के लिए भगवान विष्णु ने सुंदर स्त्री के रूप में मोहिनी का अवतार लिया था।

चित्र 11.10: मोहिनीत्तम

ओडिसी

ओडिसी नृत्य शैली का उद्गम ओडिशा से हुआ। यह विश्व में प्राचीनतम नृत्य शैलियों में से वर्तमान में जीवित शैलियों में से एक माना जाता है। प्राचीन समय में यह ओडिशा के मंदिरों में किया जाता था। हावभाव और मुद्राओं के संबंध में यह काफी हद तक भरतनाट्यम से मिलता जुलता है। यह नृत्य संस्कृत नाटक गीत गोविंद पर आधारित है जिसमें श्री कृष्ण के प्रति प्रेम और समर्पण दिखाया गया है।

चित्र 11.11: ओडिसी

सत्रिया

यह असम का शास्त्रीय नृत्य है। इसकी शुरुआत असम के महान वैष्णव संत और सुधारक महापुरुष शंकरदेव द्वारा की गई। सत्रिया नृत्य परंपरा में हस्तमुद्राओं, पैरों की मुद्राओं तथा संगीत आदि के सिद्धांतों पर सख्ती से ध्यान दिया जाता है। नर्तक की पोशाक असम पट रेशम की बनती है और पारंपरिक असमी आभूषण ग्रहण किए जाते हैं। इस नृत्य में बोरगट नामक शास्त्रीय संगीत राग बजाया जाता है।

चित्र 11.12: सत्रिया

11.5.2 संगीत: पर्यटक आकर्षण

नृत्य की भाँति, भारतीय संगीत भी किसी स्थान या कार्यक्रम में पर्यटकों को प्रभावशाली ढंग से आकर्षित करते हैं, वास्तव में ऐसे स्थानों पर जाने वाले पर्यटकों को संगीत और नृत्य कार्यक्रमों में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए।

20वीं शताब्दी तक भारतीय संगीत को पारंपरिक रूप से मौखिक पद्तियों द्वारा पढ़ाया जाता रहा। प्रारंभिक माध्यमों के रूप में अनुदेशों, समझ और प्रसारण के संकेत नहीं दिए जाते थे। भारतीय संगीत और रचना को स्वयं गुरु द्वारा शिष्यों को समझाया जाता था। बहुत से भारतीय संगीत विद्यालय संकेतों और वर्गीकरण का अनुसरण किया करते थे।

हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत

हिंदुस्तानी संगीत मुख्य रूप से उत्तर भारत में पाया जाता है। इसकी दो मुख्य शैलियाँ हैं- ख्याल और ध्रुपद, परंतु इसकी कई अन्य शास्त्रीय और अर्ध-शास्त्रीय शैलियाँ भी हैं। हिंदुस्तानी संगीत पर फ़ारसियों का बहुत प्रभाव है, यह प्रभाव वाद्य यंत्रों, प्रदर्शन के तरीकों, रागों जैसे हिजाज़ भैरव, भैरवी, बहार और यमन के संदर्भ में है। हिंदुस्तानी संगीत में बहुत से लोक राग, जैसे लोक धुनों पर आधारित काफ़ी और जयजयवंती, तबला वादक, नगाड़े का एक प्रकार, जो कि आमतौर पर एक सुर में बजाया जाता है, हिंदुस्तानी संगीत में समय का संकेत सम्मिलित हैं।

अन्य आमतौर पाया जाने वाला यंत्र है, तारवाला तानपुरा, जो कि रागों के प्रदर्शन के समय एक स्थिर धुन बजाता है, जो संगतीकार को और संगीत की पृष्ठभूमि दोनों को संदर्भ प्रदान करता है। तानपुरा बजाने का कार्य परंपरागत रूप से वादक के विद्यार्थी द्वारा किया जाता है। इसके साथ अन्य वाद्य यंत्र जैसे सारंगी और हारमोनियम भी बजाया जाता है। यह देश में होने वाले किसी भी संगीत महोत्सव में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

कर्नाटक संगीत (दक्षिणी भारतीय संगीत)

दक्षिणी भारत का कर्नाटक संगीत, हिंदुस्तानी संगीत से अधिक लयपूर्ण और संरचना बद्ध होता है। उदाहरणस्वरूप ठाट में रागों के तर्कपूर्ण वर्गीकरण हैं और स्थायी रचनाएँ पश्चिमी और शास्त्रीय संगीत से मिलती-जुलती हैं। कर्नाटक रागों की गति हिंदुस्तानी संगीत की तुलना में अधिक तेज़ होती है। इसके अतिरिक्त, हिंदुस्तानी संगीत गोष्ठियों की तुलना में कर्नाटक गोष्ठियों में उपवादकों की भूमिका अधिक बड़ी होती है।

प्राथमिक विषयों में पूजा करना, मंदिरों का विवरण देना, दर्शनशास्त्र और नायक-नायिका जैसे विषय सम्मिलित हैं।

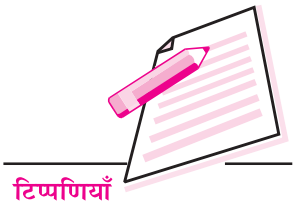

पाठगत प्रश्न 11.3

1. **सही विकल्प पर निशान लगाइए-**

   (i) भरतनाट्यम का आरंभ कहाँ हुआ-

   क. कर्नाटक ख. महाराष्ट्र ग. ओडिशा घ. तमिलनाडु

   (ii) भारतीय नृत्य निर्भर हैं-

   क. रागों पर ख. भावों पर ग. मुद्राओं पर घ. भावों और मुद्राओं पर

   (iii) कौन सा नृत्य महाकाव्यों और धर्मग्रथों की कहानियों को दर्शाता है-

   क. कथकली ख. भरतनाट्यम ग. कथक घ. ओडिसी

   (iv) दक्षिण भारतीय संगीत जाना जाता है-

   क. कर्नाटक संगीत ख. दक्षिणी संगीत

   ग. कन्नड़ संगीत घ. हिंदुस्तानी संगीत

2. नृत्य और संगीत पर्यटन आकर्षणों के सम्मिलित अंग क्यों हैं?

3. किन्हीं पाँच लोकप्रिय संगीत वाद्य यंत्रों को सूचीबद्ध कीजिए।

क्रियाकलाप 11.3

भारतीय नृत्य और संगीत की विभिन्न शैलियों की जानकारी और चित्रों को एकत्रित कीजिए और अपनी स्क्रैप बुक में चिपकाइए।

11.6 खाद्य पदार्थ: पर्यटक आकर्षणों के रूप में

लोगों में ऐसे व्यंजनों को चखने की इच्छा होती है, जिन्हें उन्होंने पहले कभी नहीं खाया हो। यही कारण है कि भोजन और पेय-पदार्थ किसी पर्यटन स्थल का मुख्य आकर्षण बन जाते हैं। मेलों और त्योहारों में बहुत से व्यंजन बनाए जाते हैं। सेवयियाँ, ऐसी ही एक मिठाई है जो ईद-उल-फितर पर बनाई जाती है, जो सेवयियाँ वाली ईद के नाम से लोकप्रिय है।

समान रूप से, गुजिया नाम की मिठाई होली पर बनाई जाती है और बहुत से व्यंजन प्रसाद के रूप में किसी विशेष अवसर पर ही बनाए जाते हैं, जो केवल उन्हीं दिनों में उपलब्ध होते हैं। जैसा कि पहले बताया गया है कि, भारत एक बहुसांस्कृतिक देश है, जिसके कारण यहाँ व्यंजनों और पेय-पदार्थों के अनेक प्रकार मिलते हैं, जो कि त्योहारों के दिनों में या उन पर्यटकों द्वारा बड़े

चाव से खाए जाते हैं जिन्हें भोजन पसंद हैं। नीचे दिए गए कुछ व्यंजन भारत के लोकप्रिय व्यंजनों में से हैं जिन्हें पर्यटक खाना पसंद करते हैं और अपने घर भी ले जाते हैं जैसे गुजरात और राजस्थान की नमकीन, गुरुग्राम का ढोडा, आगरा का पेठा और मथुरा का पेड़ा, केरल के केले के चिप्स, कोलकता की मिष्टी दही और रसोगुल्ला, वहीं कश्मीर का केसर और वाज़वान और कुल्लू के सेब।

भारत में पर्यटकों के लिए उपलब्ध व्यंजन हैं

1. रोगन जोश (क्रीमवाला गोश्त), गुश्तबा (दही में मसालेदार मीट के गोले) और स्वादिष्ट बिरयानी (चिकन या संतरी रंग वाले चावलों में गोश्त, ऊपर से डाली गई चीनी और गुलाब जल)
2. तंदूरी पकवान (हर्बस में मेरिनेट किया हुआ या क्ले ऑवन में सेंका हुआ चिकन, मांस या मछली) और कबाब भी उत्तरी व्यंजन हैं।
3. भुजिया (सब्ज़ियों की तरकारी), डोसा, इडली और सांभर (चावल के पैनकेक, अचार के साथ गुलगुले और सब्जियाँ, तरकारी) और रायता (कद्दुकस किए खीरे और पुदीने को दही में मिला कर तैयार किया हुआ)।
4. बोंबे डक (तरकारी या फ्राई की हुई मछली), पोमफ्रट।
5. पारसी धन सक (तरकारी के साथ पका हुआ चिकन या गोश्त) तथा विंडालू विनेगर मारिंड।
6. बंगाली मछली के रूप में दही माछ दही में (करीड मछली जिसमें हल्दी और अदरक का छौंक लगा हो।) मलाई प्रॉन नारियल सहित करीड प्रॉन।
7. पूड़ियाँ, चपाती, मक्की, बाजरा, रोटी-सरसों का साग तथा नान आदि। भारत भर में समान्यत: मिलने वाली दालें (विभिन्न सब्ज़ियों वाली तरकारी) और दही या छाछ।

मिठाइयाँ

आमतौर पर खाई जाने वाली भारतीय मिठाइयों में शामिल हैं-

1. बरफी- सूखे दूध से बनी इस मिठाई में काजू और पिस्ते भी डाले जाते हैं जिस पर आमतौर पर चाँदी का वर्क भी लगाया जाता है।
2. चिक्की- मूँगफलियों और गुड़ से बनी मिठाई।
3. गुलाब जामुन- भूने हुए दूध से बने गोलों को चाशनी जैसे- गुलाब की चाशनी या शहद से बनी चाशनी में डाल कर इस मिठाई को बनाया जाता है।
4. जलेबी- आटे को गोल-गोल आकार में गूँथ कर चाशनी में तला जाता है। इसे आमतौर पर दूध, चाय, दही या लस्सी के साथ परोसा जाता है।
5. कुल्फी- यह एक भारतीय आइस्क्रीम है, जिसे कई फ़्लेवर्स में बनाया जा सकता है जैसे - आम, केसर या इलायची।

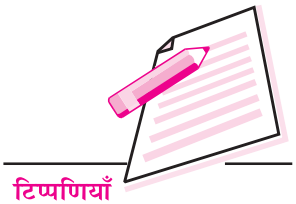

6. खीर- चावलों और दूध से मिल कर बनाई जाती है।
7. मालपुआ- गेहूँ या चावल के आटे से बनी रोटी जिसे चाशनी में अच्छी तरह तला जाता है।
8. रसोगुल्ला- यह एक लोकप्रिय मिठाई है, जिसे पनीर के छोटे-छोटे गोलों को चाशनी में डाल कर बनाया जाता है।
9. संदेस- पनीर से बनी एक ऐसी मिठाई जिसमें चीनी और गुड़ मिलाया जाता है।
10. श्रीखंड- दही को मथ कर निकाली गई क्रीम से बनी इस मिठाई में आमतौर पर सूखे फल जैसे सूखे आम मिलाए जाते हैं।
11. काजू कतली- इसे बनाने का तरीका बरफी जैसा है, मुख्य रूप से इसमें काजू का चूरा, घी, इलायची पाउडर और चीनी मिलाई जाती है।
12. रबड़ी- रबड़ी को बनाने के लिए दूध को धीमी आँच पर हल्का गुलाबी होने तक बहुत देर तक पकाया जाता है, इसमें स्वादिष्ट बनाने के लिए चीनी, मसाले और बादाम मिलाए जाते हैं।

पेय- पदार्थ

अल्कोहल रहित वाले पेय-पदार्थ

1. मसाला चाय
2. पश्चिमी भारत में लोकप्रिय भारतीय फ़िल्टर कॉफी
3. लस्सी
4. सत्तू
5. छाछ, शरबत और नींबू पानी
6. बादाम दूध और नारियल पानी
7. पनीर सोडा या घोली सोडा

पाठगत प्रश्न 11.4

1. भारत में पर्यटक आकर्षण के रूप में व्यंजनों का महत्व क्यों हैं?
2. पर्यटकों के लिए उपलब्ध भारत के किन्हीं पाँच खाद्य पदार्थों के नाम बताइए।

क्रियाकलाप 11.4

भारतीय व्यंजनों, मिठाइयों, पेय पदार्थों की क्षेत्रानुसार सूची बनाइए और इनके बारे में चित्रों सहित जानकारी एकत्रित कीजिए।

आपने क्या सीखा

- किसी भी समाज के सांस्कृतिक घटक उसके धर्म, त्योहार, कार्यक्रमों पर आधारित होते हैं।
- आपने देश भर में आयोजित होने वाले विभिन्न उत्सवों के बारे में जानकारी प्राप्त की और उनसे संबंधित समुदायों और उन महीनों के बारे में भी जानकारी प्राप्त की जिनमें ये मनाए जाते हैं।
- आपने देशभर में अनेक क्षेत्रों में होने वाले अनेक मेलों के बारे में जाना। उनसे संबंधित घटनाओं, व्यंजनों और कार्यक्रमों के बारे में भी जानकारी प्राप्त की।

पाठांत अभ्यास

1. उत्सवों और मेलों में अंतर स्पष्ट करें।
2. संस्कृति, त्योहार और मेले पर्यटकों का आकर्षण क्यों माने जाते हैं?
3. हिंदुओं के तीन मुख्य त्योहारों का उल्लेख करें। ये कैसे पर्यटकों के आकर्षण का केंद्र बने, यह भी समझाइए।
4. मुस्लिमों के किन्हीं दो मुख्य त्योहारों का उल्लेख करें। पर्यटक आकर्षण के रूप में इनकी भूमिका भी समझाइए।
5. जैनियों और बौद्धों के मुख्य त्योहारों के नाम बताइए और पर्यटक आकर्षण के रूप में उनके महत्व के बारे में भी लिखिए।
6. सिखों और ईसाइयों के मुख्य त्योहारों की सूची बनाइए, जो पर्यटकों का आकर्षण केंद्र हैं।
7. विभिन्न स्थानों पर पर्यटकों को आकर्षित करने वाले राष्ट्रीय त्योहारों के महत्व का वर्णन कीजिए।
8. पर्यटक आकर्षण के रूप में भारत में लगने वाले पाँच प्रमुख मेलों पर प्रकाश डालिए।
9. पर्यटक आकर्षण के रूप में भारतीय नृत्यों पर टिप्पणी कीजिए।
10. किन्हीं तीन भारतीय नृत्यों की विशेषताओं पर प्रकाश डालिए जो पर्यटकों के लिए मुख्य रूप से आकर्षण के केंद्र हों।

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

11.1

1. ग
2. क

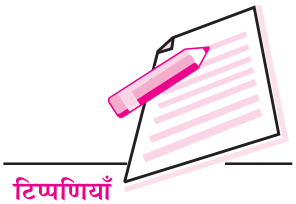

3. ग

4. क. असम ख. पंजाब ग. ओडिशा घ गुजरात

11.2

1. (i) क

   (ii) ग

2. यहाँ कई ऐसे कार्यक्रम होते हैं जो लोगों को आकर्षित करते हैं जैसे गोआ कार्निवल या कुंभ का मेला।

3. ये कार्यक्रम प्रत्येक 12 वर्षों में होते हैं और हिंदू गंगा नदी में स्नान करना एक पवित्र कर्म मानते हैं।

4. गोआ कार्निवल एक वार्षिक महोत्सव है जो गोआ में हर वर्ष आयोजित किया जाता है। यह उत्सव मौज-मस्ती, उल्लास और आनंद से भरपूर होता है। इस उत्सव में भाग लेने के लिए दर्शकों की भारी भीड़ जमा रहती है।

11.3

1. (i) घ

   (ii) घ

   (iii) क

   (iv) क

2. विशेष रूप से विदेशी पर्यटकों द्वारा नृत्य और संगीत को बहुत पसंद किया जाता है क्योंकि ये उत्सव उनके द्वारा लोकप्रिय बनाए गए हैं जो भारतीय विदेशों में जाकर बस गए हैं।

3. मृदंग, सारंगी, तबला, बाँसुरी, हारमोनियम, सितार, वीणा, ढोलक, सरोद।

11.4

1. देश के त्योहारों, उत्सवों या मेलों में होने वाले किसी भी सांस्कृतिक कार्यक्रम में व्यंजन महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

2. मुगलई, औधी, राजस्थानी, दक्षिण भारत, पंजाबी, गुजराती, मराठी व्यंजन।